नकली उत्पाद भारत के बाज़ार का 25-30: ASPA और CRISIL की रिपोर्ट

- **ASPA** और **CRISIL** ने अपनी तरह की पहली रिपोर्ट 'स्टेट ऑफ काउन्टरफ़ीटिंग इन इंडिया 2022' जारी की
- यह रिपोर्ट भारत के 12 शहरों में उपभोक्ताओं एवं खुदरा विक्रेताओं के साथ किए गए सर्वेक्षण पर आधारित है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों में जालसाज़ी गतिविधियों एवं नकली उत्पादों के बारे में जानने का प्रयास किया गया है।
- उपभोक्ताओं की धारणा के मुताबिक बाज़ार में नकली उत्पादों की सीमा 25-30 फीसदी है, जो उद्योग जगत के अनुमानों की तुलना में अधिक है।
- सबसे ज़्यादा जालसाज़ी गतिविधियां एफएमसीजी, परिधान एवं कृषि रसायन क्षेत्रों में सामने आई हैं (तकरीबन 30 फीसदी), इसके बाद फार्मास्युटिकल, ऑटोमोटिव एवं कन्ज़्यूमर ड्यूरेबल्स सेक्टर में भी नकली उत्पादों के बहुत अधिक मामले (20-25 फीसदी) पाए गए हैं।
- परिधान (31 फीसदी), एफएमसीजी (28 फीसदी), ऑटोमोटिव (25 फीसदी) शीर्ष पायदान के उद्योग हैं जहां उपभोक्ताओं को सबसे ज़्यादा नकली उत्पादों का सामना करना पड़ा। इसके बाद फार्मास्युटिकल्स (20 फीसदी), कन्ज़्यूमर ड्यूरेबल्स (17 फीसदी) और कृषि रसायन (16 फीसदी) में भी बड़ी मात्रा में नकली उत्पाद पाए गए।
- 27 फीसदी उपभोक्ता खरीद के समय इस बात से अनजान थे कि उनके द्वारा खरीदे गए उत्पाद नकली थे।
- लगभग 89 फीसदी उपभोक्ताओं ने स्वीकारा कि बाज़ार में नकली उत्पाद मौजूद हैं और 31 फीसदी उपभोक्ता जानबूझकर नकली उत्पाद खरीदते हैं।
- नकली उत्पादों से लड़ने के लिए जागरुकता बढ़ाना बेहद ज़रूरी है, उपभोक्ताओं को समझाने की ज़रूरत है कि वे किस तरह से कन्ज़्यूमर हेल्पलाईन नंबर या कन्ज़्यूमर फोरम पर नकली उत्पादों की शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

नई दिल्ली, भारत, 23 जनवरी, 2023: नकली उत्पाद भारत के सभी महत्वपूर्ण उद्योगों जैसे फार्मास्युटिकल्स, एफएमसीजी, ऑटोमोटिव्स, परिधान, कन्ज़्यूमर ड्यूरेबल्स/ इलेक्ट्रोनिक्स, कृषि उत्पादों-के स्थायी विकास को प्रभावित कर रहे हैं, **ASPA** और **CRISIL** द्वारा जारी नई रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। यह रिपोर्ट भारत के 12 शहरों (दिल्ली, आगरा, जलंधर, मुंबई, अहमदाबाद, जयपुर, इंदौर, कोलकाता, पटना, चेन्नई, बैंगलोर और हैदराबाद) में उपभोक्ताओं एवं खुदरा विक्रेताओं के साथ किए गए सर्वेक्षण पर आधारित है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों में नकली उत्पादों के बारे में जानने का प्रयास किया गया है।

सर्वेक्षण का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह है कि उपभोक्ताओं की धारणा के मुताबिक बाज़ार में नकली उत्पादों की सीमा 25-30 फीसदी है, जो उद्योग जगत के अनुमानों की तुलना में अधिक है। सबसे ज़्यादा जालसाज़ी गतिविधियां एफएमसीजी, परिधान एवं कृषि रसायन क्षेत्रों में सामने आई हैं (तकरीबन 30 फीसदी), इसके बाद फार्मास्युटिकल, ऑटोमोटिव एवं कन्ज़्यूमर ड्यूरेबल्स सेक्टर में भी नकली उत्पादों के बहुत अधिक मामले (20-25 फीसदी) पाए गए हैं। सर्वेक्षण के अनुसार तकरीबन 80 फीसदी उपभोक्ताओं ने इस बात को स्वीकारा कि बाज़ार में नकली उत्पाद मौजूद हैं और कई कारणों के चलते मजबूरी में ऐसे नकली उत्पाद खरीदते हैं जैसे कीमत के प्रति संवेदनशीलता, मांग और आपूर्ति के बीच अंतर, लक्ज़री ब्राण्ड खरीदने की चाहत, साथियों का दबाव एवं सामाजिक प्रेरणा।

27 फीसदी उपभोक्ता खरीद के समय इस बात से अनजान थे कि उनके द्वारा खरीदे गए उत्पाद नकली थे। ऐसे में इस मुद्दे और नकली उत्पादों को पहचानने के तरीकों के बारे में जागरुकता बढ़ाना और भी ज़रूरी हो जाता है। परिधान (31 फीसदी), एफएमसीजी (28 फीसदी), ऑटोमोटिव (25 फीसदी) शीर्ष पायदान के उद्योग हैं जहां उपभोक्ताओं को सबसे ज़्यादा नकली उत्पादों का सामना करना पड़ा। इसके बाद फार्मास्युटिकल्स (20 फीसदी), कन्ज़्यूमर ड्यूरेबल्स (17 फीसदी) और कृषि रसायन (16 फीसदी) में भी बड़ी मात्रा में नकली उत्पाद पाए गए। यह जानने के बावजूद भी कि उन्हें बेचे गए उत्पाद नकली हैं, अक्सर उपभोक्ता इसके बारे में रिपोर्ट दर्ज करने के लिए कोई कार्रवाई नहीं करते हैं।

रिपोर्ट के बारे में बात करते हुए श्री नकुल पसरीचा, अध्यक्ष, ऑथेन्टिकेशन सोल्युशन प्रोवाइडर्स एसोसिएशन (ASPA) ने कहा, ''भारत में वित्तीय वर्ष में नकली माल का कारोबार रु 2.6 ट्रिलियन का हुआ, और इसने लगभग सभी उद्योगों को प्रभावित किया। देश के सभी उद्योगों में यह कारोबार तेज़ी से बढ़ रहा है और उपभोक्ताओं को प्रभावित कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में उपभोक्ताओं को जागरुक करने के लिए काफी प्रयास किए गए हैं, हालांकि हमें उपभोक्ताओं को इस विषय पर और जागरुक बनाना होगा। उपभोक्ता नकली उत्पादों से लड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बड़ी संख्या में उपभोक्ता जालसाज़ी के असली खतरे से अनजान हैं, इसके चलते देश भी नकली उत्पादों पर अंकुश लगाने में उपभोक्ताओं की क्षमता का उचित उपयोग नहीं कर पा रहा है।'

सुरेश कृष्णमूर्ति, सीनियर डायरेक्टर, CRISIL मार्केट इंटेलीजेन्स एण्ड एनालिटिक्स ने कहा, ''जालसाज़ी सिर्फ उच्च स्तरीय लक्ज़री उत्पादों तक ही सीमित नहीं है। रोज़मर्रा में काम आने वाली चीज़ों जेसे जीरे से लेकर खाना पकाने के तेल और बेबी केयर आइटमों से लेकर दवाओं तक- हर तरह के नकली सामान बाज़ार में बेचे जा रहे हैं। सर्वेक्षण के अनुसार उपभोक्ताओं का मानना है कि बाज़ार में 25-30 फीसदी नकली उत्पाद बेचे जाते हैं, जो उद्योग जगत के अनुमान से अधिक है।'

भारत इस खतरे पर अंकुश लगाने के लिए क्या कर सकता है, इसके बारे में बात करते हुए श्री नकुल पसरीचा ने कहा, "देश को व्यापक, सक्रिय एवं समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा। हमें जागरुकता बढ़ाने, उचित समाधानों को लागू करने के लिए उल्लेखनीय बदलाव लाने होंगे, ताकि आपूर्ति श्रृंखला को नकली उत्पादों एवं इसमें संलिप्त अपराधियों से सुरक्षित बनाया जा सके। अपनी शुरूआत से ही ASPA ने भारत में नकली उत्पादों एवं जालसाज़ी से लड़ने के लिए उल्लेखनीय प्रयास किए हैं। हम इस दिशा में निरंतर प्रतिबद्ध हैं। आने वाले समय में भी हम सरकारी विभागों, ओद्यौगिक संगठनों एवं संस्थानों के साथ मिलकर नकली उत्पादों के खिलाफ़ भारत की लड़ाई को और सशक्त बनाते रहेंगे।'

सेक्टर विशिष्ट मुख्य बिन्दु

1. फार्मास्युटिकल्सः
    - उपभोक्ताओं के अनुसार इस क्षेत्र में नकली उत्पाद बाज़ार का 20 फीसदी हिस्सा हैं।
    - शहरों के अनुसार नकली उत्पादों की सीमाः विभिन्न शहरों में उपभोक्ताओं के साथ किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक हैदराबाद में 32 फीसदी, इंदौर में 29 फीसदी, चेन्नई में 25 फीसदी और जालंधर में 23 फीसदी उपभोक्ताओं को नकली फार्मास्युटिकल उत्पादों का सामना करना पड़ा।
    - कारणः आपूर्ति श्रृंखला में दक्षता की कमी तथा मांग एवं आपूर्ति के बीच अंतर
    - उद्योग जगत द्वारा जालसाज़ी पर अंकुश लगाने के लिए अपनाए गए तरीकेः सिक्योरिटी लेबल, टेम्पर एवीडेन्ट सील, सिक्योरिटी टियर टेप, टैगर फॉइल, सिक्योरिटी बिलीस्टर फॉइल और ट्रैक एवं ट्रेस।
2. एफएमसीजीः
    - उपभोक्ताओं के अनुसार इस क्षेत्र में नकली उत्पाद बाज़ार का 25-30 फीसदी हिस्सा हैं।
    - शहरों के अनुसार नकली उत्पादों की सीमाः ज़्यादातर दूसरे एवं तीसरे स्तर के शहरों और गांवों में मौजूद
    - कारणः कम लागत और असली उत्पादों की अनुपलब्धता
    - उद्योग जगत द्वारा जालसाज़ी पर अंकुश लगाने के लिए अपनाए गए तरीकेः हालांकि उद्योग जगत प्रमाणित समाधान अपनाने के लिए प्रयास कर रहा है, उपभोक्ताओं के साथ संवाद बढ़ाने की ज़रूरत है। नकली एफएमसीजी उत्पादों का सामना करने वाले 35 फीसदी उपभोक्ता इस बात से अनजान थे कि उन्हें बेचा गया उत्पाद नकली है। यह सभी सेगमेन्ट्स में सबसे अधिक है।

3. ऑटोमोटिवः
    - उपभोक्ताओं के अनुसार इस क्षेत्र में नकली उत्पाद बाज़ार का 20-25 फीसदी हिस्सा हैं।

- शहरों के अनुसार नकली उत्पादों की सीमाः विभिन्न शहरों में मौजूदगी, हालांकि चेन्नई, इंदौर और पटना में सबसे ज़्यादा मौजूदगी देखी गई।
- कारणः कम लागत और असली उत्पादों की अनुपलब्धता
- उद्योग जगत द्वारा जालसाज़ी पर अंकुश लगाने के लिए अपनाए गए तरीकेः सीधे अंतिम उपयोगकर्ता को ऑटो-पार्ट्स बेचना, जालसाज़ी विरोधी तकनीकों का उपयोग, छापेमारी, आधुनिक मैकेनिक्स, गैराज मालिकों एवं सर्विस सेंटरों द्वारा असली पार्ट्स का उपयोग।

4. परिधानः
   - उपभोक्ताओं के अनुसार इस क्षेत्र में नकली उत्पाद बाज़ार का 30-40 फीसदी हिस्सा हैं।
   - शहरों के अनुसार नकली उत्पादों की सीमाः विभिन्न शहरों में मौजूदगी, हालांकि अहमदाबाद, चेन्नई, इंदौर और कोलकाता में सबसे ज़्यादा मौजूदगी देखी गई।
   - कारणः जानबूझ कर ऑनलाईन एवं व्हॉट्सऐप ग्रुप में ब्राण्ड की फर्स्ट और सैकण्ड कॉपी खरीदी जाती है। शादियों के परिधानों के सेगमेन्ट में सबसे ज़्यादा नकली उत्पाद बेचे जाते हैं, इसके बाद लक्ज़री ब्राण्ड्स और स्पोर्ट्सवियर में भी बहुत अधिक नकली उत्पाद बेचे जाते हैं।
   - उद्योग जगत द्वारा जालसाज़ी पर अंकुश लगाने के लिए अपनाए गए तरीकेः केवल कुछ ब्राण्ड जालसाज़ी विरोधी गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं।
5. कृषि उत्पादः
   - उपभोक्ताओं के अनुसार इस क्षेत्र में नकली उत्पाद बाज़ार का 30 फीसदी हिस्सा हैं।
   - शहरों के अनुसार नकली उत्पादों की सीमाः विभिन्न शहरों में मौजूदगी, हालांकि चेन्नई, इंदौर और पटना में सबसे ज़्यादा मौजूदगी देखी गई।
   - कारणः कीमत के प्रति संवेदनशीलता, सीज़न में मांग बहुत अधिक, जागरुकता की कमी, निगरानी की कमी, अनुचित न्यायिक ढांचा और जुर्माना। 40 फीसदी किसानों ने कम कीमतों की वजह से नकली उत्पाद खरीदे। कम लागत और असली उत्पादों की उपलब्धता की कमी।
   - उद्योग जगत द्वारा जालसाज़ी पर अंकुश लगाने के लिए अपनाए गए तरीकेः कुछ ब्राण्ड जालसाजी विरोधी तकनीकों का उपयोग करते हैं। हालांकि किसानों को इसके बारे में शिक्षित करना ज़रूरी है।
6. कन्ज़्यूमर ड्युरेबल्सः
   - उपभोक्ताओं के अनुसार इस क्षेत्र में नकली उत्पाद बाज़ार का 25 फीसदी हिस्सा हैं।
   - शहरों के अनुसार नकली उत्पादों की सीमाः दूसरे एवं तीसरे स्तर क शहर नकली एवं सस्ते इलेक्ट्रोनिक्स उत्पादों से भरे पड़े हैं।

- कारणः सस्ते उत्पादों का आयात करना, उन पर असली ब्राण्ड का लेबल लगाकर बेचना, महंगे अवयवों के बजाए सस्ते और कम गुणवत्ता के अवयवों का उपयोग- इस उद्योग में ये सभी पहलु चलन में हैं।
- उद्योग जगत द्वारा जालसाज़ी पर अंकुश लगाने के लिए अपनाए गए तरीकेः ज़्यादातर ब्राण्ड्स जालसाज़ी विरोधी तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं और बाज़ार पर लगातार निगरानी बनाए रखे हुए हैं।